राधा–कृष्ण प्रेम में उद्धव–प्रंसग को काव्य रूप देने वाले नन्ददास

डॉ. आर.पी. वर्मा,
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

नन्ददास अष्टछाप के प्रसिद्ध आठ भक्त कवियों में से अन्यतम थे न केवल अष्टछापी कवियों में अपितु सम्पूर्ण भक्तिकालीन कवियों में नन्ददास की विशिष्टता को साहित्य–मर्मज्ञों ने मुक्तकंठ से स्वीकार किया है। नन्ददास अपनी अनुपम–भाव माधुरी तथा कला चातुर्यकै कारण सदैव से सहृदयों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु बने हुए हैं किन्तु दुर्भाग्य से ऐसे लोकप्रिय कवि के जीवन के सम्बन्ध में हमारा ज्ञान अत्यन्त अल्प है नन्ददास ने अपने जीवन के सम्बन्ध में अपनी कृतियों में कहीं भी कोई उल्लेख नहीं किया है जहाँ कहीं भी थोड़ी बहुत जानकारी हमें उनकी कृतियों द्वारा मिलती भी है तो वह सांकेतिक रूप में ही है। नन्ददास की जन्म तिथि जन्म स्थान वंश जाति आदि जैसे महत्वपूर्ण विषयों के सम्बन्ध में भी हमें प्रामाणिक ढंग से कोई तथ्य उपलब्ध नहीं हो पाते। चूंकि नन्ददास बल्लभ कुल जैसे प्रसिद्ध सम्प्रदाय में दीक्षित हुए थे अतः हमें उनकी रचनाओं के सम्बन्ध में अवश्य ही कुछ जानकारी उपलब्ध हो जाती है और प्रमाणिक तौर पर यह भी पता चल जाता है कि वे बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित कृष्ण भक्त कवि थे और उनके गुरू श्री विठ्ठलनाथ जी थे। अष्टछापी कवियों में से श्री विटठल नाथ के शिष्यों का विचरण देने वाली पुस्तक दो सौ वावन वैष्णवन की वार्ता और अष्ट सखान से नन्ददास के जीवन के सम्बन्ध में कुछ जानकारी मिलती है। इस कृति से पता चलता है कि नन्ददास तुलसीदास के छोटे भाई थे और विषयों में सदैव अनुरक्त रहने वाले जीव थे।

नन्ददास का जन्म १५३३ ई० में उ०प्र० के सुकर क्षेत्र श्सारों के रामपुर गांव में हुआ था। ये सनाढ्य ब्राह्मण थे। सारों से उपलब्ध सामग्री के अनुसार इनके पिता का नाम जीवन राम था और चाचा का आत्माराम। इन्हीं आत्मराम के पुत्र तुलसीदास थे। तुलसीदास और नन्ददास ने शैशव में सोरों में रहकर ही नृसिंह पंडित से संस्कृत भाषा का ज्ञान अर्जित किया था। नृसिंह पंडित रामानन्दीय सम्प्रदाय के रामोपासक थे। अतः नन्ददास ने भी प्रारम्भ में रामभक्ति को ही स्वीकार किया ऐसी मान्यता है कि सोरों से नन्ददास और तुलसीदास जी के साथ काशी चले गए और वहां रहकर अनेक शास्त्रों का अध्ययन करते रहे। वहीं रहते हुए उन्होंने एक यात्री दल के साथ द्वारक की यात्रा के लिए प्रस्थान किया किन्तु मार्ग में भटक गए और स्त्री के प्रति

अनुरक्त होकर गोकुल पहुंचे, गोकुल में उनकी भेंट गो विट्ठलनाथ से हुई औरे वहीं पुष्टि मार्ग की दीक्षा ग्रहण की। इसके बाद नन्ददास की जीवन दिशा ही बदल गयी लौकिक रागात्मक सम्बन्धों से दूर हटकर वे सच्चे कृष्णभक्त हो गये। गोस्वामी विट्ठलनाथ के साथ कथा वार्ता में उनका समय व्यतीत होने लगा। इन्हीं दिनों वे गोवर्धन में सूरदास के सम्पर्क में आये और सूर की भक्ति भावना को देखकर उनका शास्त्र मोह भंग हुआ। कहते हैं कि सूरदास के आग्रह से ही वे पुनः अपने गांव रामपुर गए थे और कमला नामक कन्या से विवाह कर सद्गृहस्थ के रूप में जीवन व्यतीत करने लगे थे। अपने गांव में उन्होंने श्याम सर नाम से एक तालाब का निर्माण कराया। जीवन के अन्तिम दिनों में वे पुनः गोवर्धन आ गए और १५८३ ई० के लगभग मानसीगंगा के तट पर उनका देहावसान हुआ।

नन्ददास जी ने विधिवत शास्त्रनुशीलन किया था। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। उनके द्वारा रचित पन्द्रह ग्रन्थों को देखकर उनका रचना वैविध्य स्पष्ट हो जाता है। इन ग्रन्थों के नाम इस प्रकार है अनेकार्थमंजरी, मानमंजरी, रसमंजरी, रूप मंजरी, विरह मंजरी, प्रेममबारह खड़ी श्याम सगाई सुदामाचरित रूक्मिणी मंगल भंवरगीत रास पंचाध्यायी सिद्धांन्त पंचाध्यायी दशमस्कन्ध भाषा गोवर्धन लीला नन्ददास पदावली अनेकार्थ मंजरी एक प्रकार का प्रयार्य कोश ग्रन्थ है। इसके मंगलाचरण में शुद्धावैल सम्बन्धी दार्शनिक विचारों का प्रकट किया गया है। मानमंजरी में भी अमरकोश के आधार पर शब्दों के पर्यायवाची ही लिखे गए हैं चमत्कार यह है कि छन्द की प्रथम पंक्ति में पर्यायवाची है और दूसरी में कवि ने उस शब्द का प्रयोग कर दूती द्वारा राधा के श्रृंगार का वर्णन किया है यह ग्रन्थ नन्ददास के भाषाविषक प्रौढ़ ज्ञान और पांडित्य का द्योतक है।

विरहमंजरी भावात्मक काव्य है। इसमें कृष्ण के वियोग में एक ब्रजवासी की विरह दशा का वर्णन है। किसी कथानक के बिना केवल काल्पनिक वियोग को ही भावात्मक शैली से वर्णित किया गया है। इससे बारहमासा शैली भी है। रूपमंजरी नन्द दास का लघु आख्यान काव्य है। इसमें रूपमंजरी के प्रति कृष्ण प्रेम के जय भाव से निरूपित करते हुए दूती इन्दुमती के साहाप्य का वर्णन किया गया है। कुछ विद्वानों का कथन है कि यह रूप मंजरी वही है जिसके प्रति नन्ददास स्वयं अनुरक्त थे। सुदामाचरित की कथा श्रीमदभागवत से गृहीत है। इस लोक प्रिय कथानक को कवि ने कृष्ण भक्ति के फलक पर अवसिति कर सख्य भाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। काव्य की दृष्टि से रचना साधारण है।

रास पंचाध्यायी नन्ददास की श्रेष्ठ कृतियों में गिनी जाती है। इसमें लौकिक एवं पर लौकिक प्रेम को समन्वित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास है। बाहय रूप में यह काव्य लौकिक गोपी प्रेम

को ही लेकर चलता है किन्तु प्रच्छन्न रूप से आध्यात्मिक कृष्ण प्रेम भी इसमें अनुस्यूत है जिसे भक्तगण सहज ही या लेते हैं। वियुक्त आत्मा (गोपी) रास लीला के माध्यम से रस रूप पर आत्मा (कृष्ण) से मिलने के लिए प्रत्यशील हैं रास पंचाध्यायी भाषा विषय प्रतिपादन शैली कवि कल्पना काव्य सौन्दर्य और मौलिक उद्भावनाओं की दृष्टि से नन्ददास की जडिया उपाधि को सार्थक बनाती हैं ।

भवरगीत नन्ददास के परिपक्व दर्शन ज्ञान विवेक बुद्धि तार्किक शैली और कृष्ण भक्ति का परिचायक काव्य है। इसके पूर्वार्द्ध में गोपी उद्धव संवाद है और उत्तरार्ध में कृष्ण प्रेम में गोपियों की विरह दशा का वर्णन है। इस रचना का मूल उद्देश्य निर्गुण निराकर ब्रहम की उपासना का खण्डन करते हुए सगुण साकार कृष्ण की भक्ति की स्थापना करना है। पूर्वाद्ध कवि की विचार वृत्ति का द्योतक है और उत्तरार्द्ध रागात्मका सरस वृत्ति का परिचय देता है। दार्शनिक सिद्धांन्तों के प्रति पादन में भी काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है। भागवत पुराणा में वर्णित भाव भी कवि की वाण से नवीन एवं मोहक रूप धारण करके ही आये हैं यह रचना नन्ददास के पांडित्य का भी निदर्शन है। नन्ददास के भ्रमरगीत में विचारों की एक संवाद के रूप में श्रृंखला चलती है। यह एक क्रमबद्ध रचना है। हां इतना स्वीकार करना पड़ेगा कि इसमें उत्तर प्रत्युत्तरों की क्रमबद्ध श्रृंखला नहीं है। इसमें सूर के भ्रमरगीत में अन्तर है। इस भ्रमरगीत का प्रारम्भ होता है गोपियों के परिचय से उद्धव आते हैं और गोपियों को अपना परिचय देते हुए उनकी विशेषताओं का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उपदेश सुनो.....

ऊनै का उपदेस सुनो ब्रजनागरी।

रूप सील लावन्य सवै गुन आगरी।

प्रेम हुजा रस रूपिनी उपजावति सुख पुंज।

सुन्दर स्याम विलासिनी नव वृन्दावन कुज सुनो ब्रज नागरी।।

इससे स्पष्ट है कि गोपियों में प्रेम सुख रस और विलास चार मुख्य तत्व हैं। और वे श्री कृष्ण में अनुरक्त हैं।

नन्ददास ने अपने भ्रमर गीत का प्रारम्भ एक वस्तु निर्देशात्मक मंगलाचरण के साथ किया है, कृष्ण का संदेश लेकर उद्धव आए तो उन्हें एकांत ही नहीं मिल पाया। काफी देर बाद उचित अवसर पाकर वे गोपियों को कृष्ण का उपदेश सुनाने लगते हैं। गोपियां कृष्ण का नाम सुनते ही मूर्छना में आ जाती हैं होश आने पर प्रथम कृष्ण की कुशल पूछती है फिर उनको कृष्ण का पूर्व रूप स्मरण हो आता है जिसके फलस्वरूप वे मूर्छित हुई थीं। उद्धव ने जल के छींटे देकर उन्हें सजग किया तो कहने लगे कि ज्ञान की आंखों

से देखने पर तुम्हें कृष्ण अपने आपसे दूर दिखाई नहीं देगें वे निर्गुण ब्रह्म की साधना का उपदेश देने लगे तो गोपियों ने उनके इस ज्ञानोपदेश का खण्डन किया और अपने प्रेम का मंडन उद्धव गोपियों के संवाद में ब्रह्म, जीव कर्मवाद ज्ञान इत्यादि सभी पर चर्चा हुई है लेकिन गोपियों इन सभी के मूल में मुक्ति की भावना को ही नहीं स्वीकारती। गोपियों के तर्क अत्यन्त सुन्दर बन पड़े हैं यद्यपि कहीं कहीं असंगतता और तर्क विहीन कथन भी है। फिर भी इस दृष्टि से हम इस भ्रमरगीत को अद्वितीय की भांति नन्ददास की वे गोपियों कटूक्तियां नहीं करती नन्ददास जी ने भागवत का सहारा लेकर बड़ी सुन्दरता से प्रेमाभक्ति का निपुण निरूपण करते हुए आध्यात्म पक्ष का प्रतिपादन श्रृंगार रस शुद्धावरण में किया है। इसके उपरान्त कर्म उपासना ध्यान धारणा इत्यादि का क्रमशः उद्धव द्वारा प्रतिपादन और गोपियों द्वारा बड़े ही सहज और चातुरीपूर्ण ढंग से खण्डन है। इसी बीच गेपियों को लगा जैसे कृष्ण उनके समक्ष ही खड़े हैं तो वे कृष्ण की संयोग–कालीन कतिपय लीलाओं का स्मरण दिलाती हुई उपालम्भ देती हैं कृष्ण से कहती हैं कि अब तुम राजा हो गए हो कुब्जा जैसी प्रेमिका तुम्हें मिल गई हैं अब हमें किसलिए पूछने लगे। विभिन्न गोपी विभिन्न प्रकार से उपालम्भ देती हैं।

इस बीच एक भ्रमर वहां चला आया और गोपियों के पैरों में लेटने लगा। भ्रमर में उद्धव और कृष्ण की अनुहारी पाकर वे उसी को उपालंभ देने लगी। इसे भी विभिन्न गोपियों ने अपने अपने ढंग से ही उपालंभ दिए हैं इसे निपट अरसिक मानती हैं गोपियों। उपालंभ देते समय गोपियों रखल निठुर जैसी संयत गालियां भी दे बैठती हैं यहां वे एक सैद्धांतिक स्तर से उतरकर मनोवज्ञानिक और मानवीय धातल पर आ जाती हैं

गोपियों के उपालंभ सुनते सुनते और गोपियों के मन में कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम देखकर उद्धव भी अपने आप पड़ते हुए उनके प्रभाव को रोक नहीं पाए और वे भी ज्ञान ध्यान की बातें छोड़कर उन्हें निश्चय ही हरिरस की यात्री समझने लगे। गोपियों को धन्य कहते हुए वे अपनी बुद्धि की विषमता पर खीझ प्रकट करते हैं और अपने अब तक के समस्त श्रम को वथा समझते हैं। गोपियों से क्षमा याचना करते हैं और स्वयं ही प्रेम को ज्ञान की अपेक्षा श्रेष्ठ बताते हैं। और अभिलाषा प्रकट करते हैं कि मैं सो ब्रज हो कोई वस्तु बन जाऊँ ताकि गोपियों को चरण मेरे ऊपर आते जाते पडते रहें। साधु संगति को उत्तम मानते हुए उद्धव कहते हैं गोपियों के प्रेम प्रसाद के परिणाम स्वरूप ही मेरी द्विविधा मिट गई है।

इसके बाद मथुरा लौटकर कृष्ण को उद्धव भली बुरी सुनाते हुए गोपियों की विरह दशा का ज्ञान कराते हैं और कहते हैं कि तुम शीघ्र ही वहां जाकर उनका कष्ट हरो और सभी का साथ भले ही छोड़ देना पड़े।

सखा उद्धव के वचन सुनकर कृष्ण के दोनों नेत्र अश्रु परिप्लुत हो जाते हैं। उनके रोम रोम में गोपिकाऐं रमण करने लगी। फिर वे उद्धव को अपनी ओर गोपियों की अभिन्नता को जल और लहरों के उदाहरण से स्पष्ट करते हैं अपना बिहार का रूप कृष्ण ने उद्धव को दिखाया और फिर उसे छिपा लिया।

नन्ददास महाप्रभु बल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के अनुयायी थे इसी कारण से उनकी भक्ति में भी पुष्टि मार्गीय दर्शन का समावेश है। कृष्ण ही ब्रह्म हैं राधा उनकी विद्या माया है और गोपियां तथा अन्य भक्तगण अविद्या माया हैं समस्त प्रकृति को एक अनुचरी के रूप में चित्रित किया गया है।

नन्ददास जी ने प्रेमा भक्ति को विशेषता दी हैं इसके मूल में भक्ति तो है ही किन्तु यह सिंचित की गई है प्रेम भाव से इसीलिए इसे प्रेम भक्ति के नाम से भी अभिहित किया गया है सूरदास जी की भाँति नन्ददासजी ने वात्सल्य भाव को नहीं अपनाया है इसीलिए कृष्ण काल के केवल उन्हीं प्रसंगों को लिया है जिनमें प्रेम भक्ति को ही प्रचुरता रहती है। उनकी रासपंचाध् यायी और भ्रमरगीत दोनों ही रचनाओं में इसी भक्ति का रूप निखरकर सामने आया है हां एक बात ध्यान देने की है कि अभी इस भक्ति में रतिभाव के लौकिक और अलौकिक दोनों ही रूप समन्वित होकर समक्ष आए हैं। इनके समन्वय में नन्ददास ने बड़ी ही चातुरी का परिचय दिया है।

कृष्ण काव्य में भगवान प्रीति के दो रूप साथ ही साथ चलते हैं किन्तु ये दोनों रूप परस्पर इतने मिले हुए हैं कि प्रकट होते हुए भी अप्रकट की सी स्थिति में हैं हरिलीला को दुर्ललितादभुत कहा गया है। कृष्ण काव्य रचयिताओं ने इसका पूरा पूरा निर्वाह अपने अपने काव्यों ग्रंथों में किया है अद्भुत इसीलिए कहा गया है कि यद्यपि वह लीला देखने से पूर्णारूपेण ऐहिक विषय प्रधान दिखाई देती है किन्तु वस्तुतः वह निर्विकार है। इसीलिए हरि भक्तों को भगवान की लीला भी पवित्रता के प्रति संदेह नहीं होता। नन्ददास जी ने विशेषतः रास वर्णन में इस भाव को स्पष्ट किया है।। रास लीला में दिव्य और आदित्य का समन्वय दिखाया गया है। भक्ति सूत्र की भक्ति की परिभाषा के आधार पर गोपी या राधा भाव ही प्रेम भक्ति है जो साधारण मनुष्यों के लिए दुर्लभ है। गोपियों का प्रेम अलौकिक असामान्य और अतुलनीय था।

नन्ददास जी वल्लभ सम्प्रदाय की पुष्टि मार्गीय भक्ति के अनुयायी थे। उसके अनुसार भगवान अपनी लीला शक्ति से दिव्य अवतार धारण कर अमलात्मा जीवों के लिए भक्ति योग का विधान करते हैं और वे आन्नदैकरसमूर्तः[६] भक्त सौन्दर्य माधुर्य सुधामयी मूर्ति के प्रति ऐसे आकृष्ट हो जाते हैं कि उन्हें भगव दर्शन के आगे

सांसारिक सुख तो क्या मुक्ति कैवल्य और अपुनर्जन्म इत्यादि सभी हेय लगते हैं। भक्त को भगवान का विशुद्ध प्रेम ही अपेक्षित रहता है। गोपियों ने भ्रमरगीत में उद्धव के ज्ञान का जो खण्डन किया है वहां इसी बात का घोतित किया है नन्ददास की भक्ति का मूल पूर्ण समर्पण की भावना ही रही है वे प्रेम को अमृत मानते हैं।

नन्ददास जी ने गोपियों और कृष्ण को पति पत्नी के रूप में मानकर उनकी प्रेम लीलाओं के चित्रण से अपनी इस भक्ति को स्पष्टता उभारकर रखा है। मधुरभाव के भक्तों के लिए इन्द्रियों के नियमन का प्रश्न नहीं उठता।

नन्ददास जी की भक्ति गोपियों के माध्यम से प्रस्फुटित हुई है। रास क्रीड़ा में उन्होंने अपनी भक्ति और दर्शन सिद्धांत को उभार दिया है। वस्तुतः रास क्रीड़ा माया तथा हरि या प्रकृति और पुरूष का वर्णन है। केन्द्र में माया पुरूष और चारों ओर फिर माया पुरुष का वर्णन होत है माया पुरुष रूप में राधा कृष्ण थे और उनके चारों ओर फिर माया पुरुष ही थे इस बात को विज्ञान भी स्वीकार करता है कि एक अणु के चारों ओर दूसरा आणु वेग से घूमता है और इसी से सृष्टि की समस्त उत्पत्ति स्थिति एवं लय का चलता रहता है। और समत सृष्टि हरि रूप में केन्द्रित होकर केन्द्रीभूत हो नर्तन सा करती रहती है। भक्ति के क्षेत्र में माया के भी दो रूप स्वीकार किए गए है। पहली है विद्या माया और दूसरी है अविद्या माया। राधा ही यहां विद्या माया हैं। इसी को हरि की आल्हादिनी शक्ति भी कहा गया है। अविद्या माया के अनेक रूप माने गए हैं इसी से राधा के अतिरिक्त अन्य समस्त गोपियां अविद्या माया है और इनके अतिरिक्त अन्य समस्त कलाएँ भी इसी श्रेणी में आते हैं।

नन्ददास जी ने इस रास नृत्य में समस्त प्रकृति को लीन दिखाया है नन्ददास जी ने प्रेम भक्ति का सांगो पांग चित्रण किया है और इसमें वे पूर्णतः सफल भी रहे हैं। नन्ददास जी की समस्त रचनाओं में श्रृंगार रस की प्राधान्य मिलता है यदि हम यह कहें कि नन्ददासजी ने श्रृंगार रस के अतिरिक्त अन्य किसी रस को वर्णित ही नहीं किया और यदि किया भी तो नहीं के बराबर तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। श्रृंगार के आलम्बन है कृष्ण और आश्रय है गोपियां इस प्रकार हम कह सकते हैं कि नन्ददास श्रृंगार के संयोग पक्ष के चित्रण में सफल रहे हैं।

नन्ददासजी की शब्दावली अत्यन्त मधुर रही है ब्रजभाषा का साहित्यिक रूप ही उन्होंने लिया है। जहां जहां कतिपय अन्य भाषाओं के शब्दा भी आ गए हैं लेकिन वे शब्द है जो तब तक ब्रजभाषा में बिलकुल घुल मिल गए थे। उन्होंने शबद मैत्री बड़ी ही कुशलता और सफलता से की है। उनका विधान सुन्दर होने के साथ कलापूर्ण भी रहा है यों तो ब्रजभाषा अपने माधुर्य के लिए प्रसिद्ध ही है फिर भी नन्ददास जी

अपनी भाषा में सुकुमारता प्रांजलता और माधुर्य का पूर्ण रूपेण ध्यान रखा है।

उन्होंने अपनी रचनाओं में लम्बे समासों की महाप्राण और संयुक्त वर्षों की यथासाध्य कमी ही रखी हैं। वे इस बात से पूर्णतः परिचित थे कि लम्बी सामाजिक पदावली से काव्य में क्लिष्टता दोष आ जाता है।

नन्ददास के समस्त रचनाओं के वाक्य विन्यास में व्याकरण सम्मतता प्राप्त होती है। इसीलिए इन्होंने जहां कहीं भी लोकोक्तियोंऔर मुहावरों का प्रयोग किया है वहां बहुत सावधानी बरती हैं इनके प्रयोग में सहजता स्वाभाविकता और अनोखी भाव व्यंजकता मिलती है।

ब्रजभाषा के कवियों की एक और विशेषता रही है और वह है विशषणों का प्रयोग नन्ददास जी ने इसमें बड़ी सतर्कता से काम किया है। उन्होंने विशेषणों के प्रयोग न केवल सौन्दर्य की विशषता के लिए किए हैं और न विशषणों का प्रयोग केवल चरण पूर्ति के लिए किया है वरन समस्त विशेषणों से वे एक विशेष अभिप्राय और हेतु की व्यंजना करते हैं। भक्ति की दृष्टि से भी प्रेम अनुराग और प्रति शब्दका प्रयोग सिद्धान्तनुसार किया गया है। यही बात विशेषयों के प्रयोग के विषय में कहीं जा सकती है शब्दों के प्रयोग से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि कवि का भाषा पर जबरदस्त अधिकार है।

व्याकरण की दृष्टि से भी यदि देखें तो हमें नन्ददासजी के भाषा प्रयोग कौशल की सराहना ही पड़ेगा। उन्होंने कहीं कहीं कारकों और क्रियाओं का प्रयोग किया है कवि ने भाषा को सर्वत्र सरल सुबोध और स्पष्ट रखते हुए उसे माधुर्य और मृदुलता को बढ़ाने का ही प्रयास किया है। रीतियों की दृष्टि से और गुणों की दृ ष्टि से भावानुकूलता का विशेष ध्यान रखा है। सर्वत्र प्रसद और माधुर्य गुणों का प्राधान्य है। लालित्य की दृष्टि से भी भाषा में किसी प्रकार की कमी नहीं मिलती। नन्ददासजी ने उन्हीं छदों को चुना है जिनमें गत्यात्मकता और लयात्मकता अत्यन्त सहज रूप से सरल और मंजुल है। नन्ददास जी ने रोला दोहा चौपाई सोरठा इसके अतिरिक्त अनेक राग रागनियों में पदों की भी रचना नन्ददासजी ने की है। नन्ददास जी के काव्यों में अलंकारों की प्रधानत देखने को मिलती है जैसे शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग किया है शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक श्लेष और काकु वक्रोक्ति तथा अर्थालंकारों में अधिकांशतः उत्प्रेक्षा उपमा रूपक और व्यतिरेक का प्रयोग मिलता है।

नन्ददास जी ने अपने समय में प्रचलित राग रागनियों में लिखे जाने वाली पद शैली को तो अपनाया ही साथ ही सूफी कवियों और तुलसी

की दोहा चौपाई पद्धति को भी अपनाया है। नन्ददास की शैली में उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है। यद्यपि इन्होंने सूर इत्यादि की भांति अपनी कविता में अपना नाम कहीं भी नहीं दिया फिर भी उनकी रचनाओं से स्पष्ट प्रकट हो जाती है कि यह नन्ददास जी की रचना है।

नन्ददास जी ने काव्यों की दृष्टि से उन्होंने वर्णनात्मक और कथात्मक दो प्रकार के काव्य लिखें हैं। नन्ददास जी ने गत्यात्मक शैली का प्रयोग किसी भी वस्तु या दृश्य के वर्णन हेतु किया है। वर्णन शैली की विशेषता यह है कि वर्णन के लिए केवल वे पदार्थ लेता है जिनसे मानव मन प्रभावित होता है। और जो रसोत्कर्षक तथा भावोद्दोपक होते हैं। नन्ददास की रासपंचाध्यायी रचना में श्रृंगार रस की प्रधानता के कारण उसमें केवल भावन प्रधान घटनाऐं ही स्थान पा सकी हैं इसीलिए घटना कथन में तो क्रियात्मक और भावनाभिव्यंजन में भावात्मक पद विन्यास की शैलियों का उपयोग किया गया है। दृश्यादि के वर्णन में कवि ने चित्रांकन शैली का उपयोग किया है। गोपी और कृष्ण के संवादों में कथागत वार्ता शैली ही कवि ने अपनायी है। भ्रमरगीत में क्योंकि खंडन मंडन दोनों हैं इसीलिए उसमें तर्कात्मक पक्ष प्रतिपादन शैली मिलती है। इसी में अन्योक्ति पद्धति काभी प्रयोग हो जाता है इसमें व्यंजकता पर्याप्त मात्रा में मिलती है साथ ही इसमें कवि ने बड़े ही कौशल के साथ भावनात्मक शैली का भी समावेश किया है।

ब्रजभाषा के कवियों में विद्वानों ने सूर के बाद नन्ददास का द्वितीय स्थान स्वीकार किया है। इसमें न तो किसी के साथ उन्होंने अन्याय बरता है और न उसका कोई पूर्वाग्रह ही दृष्टिगोचर होता है। सूर की गोपियों में जहां भावुकता का प्राबल्य है वहां उनमें तर्कशीलता प्रत्युत्पन्नमति उतना नहीं जितना नन्ददास की गोपियों में है। नन्ददास जी ने तो समस्त वार्तालाप को ही तर्क वितर्क के रूप में चलते हुए समस्त वर्णन इतनी भावुकता की पूर्णता के साथ किया है कि काव्य कौशल की दृष्टि से मनोमुग्धकारी तो है ही उसका प्रभाव भी अक्षण्य पड़ता है। सूर में या अन्य भ्रमर गीतकारों में जहां विशदता है वहां नन्ददास जी ने उसी समस्त तर्क को केवल ७५ छन्दों में ही गुंफित कर रखा है ओर देखने की बात यह है कि शैथिल्य कहीं भी

नहीं है। गोपियों के प्रेम विरह कातरता और वियोग की आन्तरिक संयोग स्थितियों का वर्णन अत्यन्त सुन्दर और भावमयी भाषा में किया गया है। गोपियों के अनुभव देखने के योग्य है। यह हम स्वीकारते हैं कि सूरदास या रत्नाकर की भांति इसका भाव पक्ष इतना प्रबल नहीं है फिर भी हमें काव्य कला के पर्याप्त तत्वों का समावेश यहां मिलता है। भ्रमरगीत की प्रभविष्णुता और मार्मिकता का प्रमाण इससे बड़ा और क्या हो सकता है कि पाठक को पढ़ते समय ऐसा लगत है मानों गोपियों के इस प्रेममय आत्म निवेदक स्वर में नन्ददास का स्वर भी मिल रहा है। अन्त में हम कवि श्री सत्यनारायण श्श्रीशश के शब्दों में कहेंगे कि श्कवि ने निजी प्रेम भक्ति की उत्कृष्टता स्वहृदयगत भक्ति भावना की तन्मयता तथा इष्ट मिलने की उत्कट आकांक्षा सभी का ऐसा सुन्दर सरस वर्णन किया है कि वे उनकी अनुभूति सी ज्ञात होती है। और उनका श्रोताओं पर प्रभाव पड़ता है। नन्ददास जी का स्थान क्या काव्य कला और क्या भक्ति भाव निरूपण दोनों की दृष्टि से भ्रमरगीत परम्परा में सूरदास के बाद आता है।

सन्दर्भ

1. उद्धवशतक (जगन्नाथ दास रत्नाकर द्वारा रचित)– सम्पादन डॉ० जगदीश गुप्त, प्रकाशक सुमित्र प्रकाशन इलाहाबाद

2. त्रिवेणी (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित)–सम्पादक कृष्णानन्द प्रकाशक नागरी प्रचारिणी सभा वारणसी नई दिल्ली।

3. हिन्दी साहित्य का इतिहास–सम्पादक डॉ० नगेन्द्र प्रकाशक – मयूर पेपर बैक्स नौएडा।

4. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–एन०सी०ई०आर०टी० ।

5. राम पंचाध्यायो (नन्ददास द्वारा रचित)–प्रो० विश्वम्भर अरूण, प्रकाशक अशोक प्रकाशक, नई सड़क दिल्ली–६

6. उद्धव शतक (रत्नाकर दास द्वारा रचित)–प्रो० भारत भूषण सरोज एवं डा० कृष्ण देव शर्मा, प्रकाशक – विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

7. सूरसागर सार सटीक–सम्पादक डा० धीरेन्द्र वर्मा प्रकाशक साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड जीरो रोड, इलाहाबाद।

8. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास–श्री राम स्वरूप चतुर्वेदी लोक भारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद।